

छत्तीसगढ़ में वास्तुकला: "बस्तर के विशेष संदर्भ में"

भूमिका जैन *, शोधार्थी, इतिहास विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

डॉ. डी. एम. साहू** सहायक प्राध्यापक इतिहास विभाग कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

आधुनिक छत्तीसगढ़ प्रांत मध्य प्रदेश का दक्षिणी पश्चिमी भाग है। राज्य के रूप में छत्तीसगढ़ का अस्तित्व 1 नवंबर 2000 में आया।¹

राजनीतिक परिदृश्य में छत्तीसगढ़ उत्तर प्रदेश झारखंड उड़ीसा आंध्र प्रदेश तेलंगाना महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश से घिरा है। यह भूआवेष्टित राज्य है

वैसे भौगोलिक धरातल पर छत्तीसगढ़ 17° 46" एवं 24° 5" उत्तरी अक्षांश तथा 80° 15" एवं 84° 20" देशांतर पूर्व के मध्य स्थित है। दूर से देखने पर राज्य समुद्री घोड़े की तरह नजर आता है। इसकी सीमा सात राज्यों उत्तर प्रदेश झारखंड उड़ीसा मध्य प्रदेश महाराष्ट्र आंध्र प्रदेश तेलंगाना राज्यों से लगती है।²

वर्तमान बस्तर ब्रिटिश काल में मध्य प्रांत का हिस्सा था। ब्रिटिश कालीन भारत में बरार एक अंग्रेजी राज्य था जिसके अंतर्गत वर्तमान छत्तीसगढ़ राज्य की 14 रियासतें आती थीं। इन्हीं रियासतों में बस्तर भी एक रियासत था, जिसे ब्रिटिश कालीन भारत में फ्यूडररी स्टेट माना जाता था।

डी ब्रेट के अनुसार³ इसकी स्थिति भौगोलिक मानचित्र में 17° 48" से 20° 14" उत्तरी अक्षांश से लेकर 80° 15" से 82° 1" पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है, जिसका क्षेत्रफल 13062 किलो मिल था। उत्तर से दक्षिण तक इसकी लंबाई लगभग 164 मिल और पूर्व से पश्चिम तक की चौड़ाई लगभग 128 मिल है।

ग्रिक्शन के अनुसार⁴ 17° 46" एवं 20° 14" उत्तरी अक्षांश से लेकर 80° 15" से लेकर 82° 1" पूर्वी देशांतर के बीच बस्तर क्षेत्र भारत के मध्य प्रांत के सुदूर दक्षिण पूर्व कोने में स्थित है। इसका क्षेत्र तत्कालीन संशोधित सर्वेक्षण के अनुसार 13725 वर्ग मील है। यह आकार में बेल्जियम की अपेक्षा बड़ा और लगभग हॉलैंड जितना बड़ा है।⁵

लाल जगदलपुर के अनुसार बस्तर उत्तरी सीमा से दक्षिण सीमा तक 180 मील लंबा और पूर्वी सीमा से लेकर पश्चिमी सीमा तक कुल 125 मील चौड़ा है। प्राचीन कालीन बस्तर राज्य का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत था।⁶

ऐतिहासिक दृष्टि से छत्तीसगढ़ का अपना एक विशिष्ट स्थान रहा है। आज छत्तीसगढ़ किसी समय सभ्यता और संस्कृति का महत्वपूर्ण केंद्र था।⁷

हम भारत के इतिहास के अग्रिम युग की तरफ दृष्टि डालते हैं तो उस समय हमारे छत्तीसगढ़ का एक बड़ा ही महत्वपूर्ण रूप सामने आता है।⁸

प्रागैतिहासिक काल में छत्तीसगढ़ का बहुत सा हिस्सा दंडकारण्य के नाम से जाना जाता था। इसमें प्रायः छत्तीसगढ़ कमिश्नरी व नागपुर कमिश्नरी का कुछ भाग आता था।⁹

छत्तीसगढ़ के आरंभिक काल के संबंध में ना तो साहित्य और ना ही पुराणों से कोई जानकारी मिलती है। केवल पुरातात्विक साक्ष्य है जिसके आधार पर कुछ बातें स्पष्ट होती हैं। छत्तीसगढ़ का पुरातत्व अत्यंत समृद्ध है। सीता बेंगरा जोगीमारा की गुफा मल्हार लाफ़ागढ़ ताला सिरपुर राजिम रायगढ़ खरौद इत्यादि छत्तीसगढ़ के पुरातात्विक स्थल हैं।

बस्तर के विशेष संदर्भ में अगर बात की जाए तो चित्रकूट बारसूर नारायण पाल भोंगा पाल केशकाल धनोरा अड़ंगा ऐसा पुरातात्विक स्थल है जो छत्तीसगढ़ के इतिहास में कुछ अध्याय जोड़ने हैं।

बस्तर दक्षिणापथ के मुख्य पथ में स्थित था। राम का वन गमन भी इसी क्षेत्र से हुआ था। सामरिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण होने के बावजूद भी अशोक के शिलालेख और स्तूप जैसे संचार इस काल से प्राप्त नहीं हुए। किंतु संभावना दूसरी होगी कि कलिंग युद्ध के दौरान अशोक का प्रभाव इस क्षेत्र में पड़ा होगा।

डॉ. तृषा शर्मा के अनुसार बस्तर अंचल के इतिहास में नलों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। नलों को इस बात का श्रेय मिलता है कि इन्होंने इस क्षेत्र को राजनीतिक इकाई के रूप में संगठित किया। इस वंश से संबंधित शासकों की 32 मुद्राएं अड़ंगा सी प्राप्त हुई हैं जिसमें से 29 स्वर्ण मुद्राएं वराहराज की हैं जिसका काल पांचवीं शताब्दी ईस्वी का पूर्वार्ध माना जाता है।¹⁰

स्थापत्य कला की दृष्टि से देखा जाए तो इस समय से संरचनाएं मिलने लगती हैं। भोंगा पाल से जो स्तूप व बौद्ध प्रतिमा मिली है वह लगभग पांचवीं छठवीं शताब्दी की है और विद्वान इसे नल काल का मानते हैं। चैत्य मंदिर का निर्माण एक ऊंचे चबूतरे पर किया गया है। मंदिर पूर्वाभिमुखी है। चबूतरे से मंदिर के भग्नावेशों का पिछला हिस्सा अर्ध चक्राकार है। जिस पर मंदिर का गर्भ गृह दक्षिणापथ मंडप और देव पिठिका की भग्नावेश है। यह भी कहा जा सकता है कि यह संभवतः बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थल है।

भोंगा पाल में बौद्ध चैत्य से कुछ दूर स्तूप नुमा संरचना मिली है। यह भी ईंटों की माप और संरचना बौद्ध चैत्य के ईंटों के समान है। किंतु यह जगह आज भी खुदाई के बंजर में है।

छत्तीसगढ़ में वास्तुकला का स्पष्ट और नियमित इतिहास भव्य कलात्मक देवल्यों में झलकता है। इस दृष्टि से नारायण पाल महत्वपूर्ण है। नारायण पाल चित्रकूट के समीप स्थित है। भानपुरी से भी पहुंच मार्ग पर स्थित है। नारायण पाल मंदिर का निर्माण छिंदक नागवंश के शासकों के समय करवाया गया। नागवंश की स्थापना नृपति भूषण ने सन 1023 में किया था। इस वंश के सोमेश्वर देव का शासन काल 1097 ई तक रहा। सोमेश्वर की माता गंग महदेवी विष्णु की भक्ति थी। इन्होंने इंद्रावती नारंगी के संगम पर विष्णु मंदिर बनवाया।¹¹

इस मंदिर की स्थापत्य कला अति सुंदर व उच्च कोटि की है।

राय बहादुर डॉक्टर हीरालाल ने नागवंशी राजाओं की वास्तुकला की प्रशंसा की है। भारत के खजुराहो मंदिर के समकालीन नारायण पाल मंदिर पूरे बस्तर जिले का एकमात्र मंदिर है। यहां विष्णु की मूर्ति स्थापित की गई है। इस पर चालुक्य शैली का प्रभाव देखने को मिलता है।

छिंदक नागवंश काल के भी स्थापत्य कला के कुछ नमूने बारसूर से मिलते हैं। ज्ञातव्य हो कि बारसूर छिंदक नागवंशी राजाओं की राजधानी रही है। यहां के बत्तीसा मंदिर व मामा भांजा मंदिर दृष्टिगत है। बारसूर के बारे में 1068 ई का एक शिलालेख तेलुगू लिपि में लिखा है। महामण्डलेश्वर चंद्र आदित्य महाराज जो नागवंशी शासक धारा वर्ष के प्रमुख थे और तेलुगु चोड़ परिवार और गांव के प्रमुख मुखिया थे एक तालाब खुदवाया और इस स्थल केंद्र में इस अदभुत शिव मंदिर का निर्माण कराया। उन्होंने राजाधिराज से एक गांव खरीदा और मंदिर निर्माण के दौरान किए गए खर्चों को पूरा करने के लिए इसे दान कर दिया।¹²

ए बी एडमिन 2016.12.23 बस्तर का ऐतिहासिक शहर बारसूर।

मंदिर बुद्ध तालाब नमक तालाब के पास स्थित है। मंदिर की संरचना एक ऊंचे चबूतरे पर बनाई गई है। गर्भ गृह मंच पर बनाया गया है। गर्भ गृह की ओर मुख करके नंदी की मूर्ति देखी जा सकती है। मंदिर की बाहरी दीवार पर ब्रह्मा की एक छवि भगवान विष्णु प्रजापति दक्ष उमा महेश्वर कामुक मूर्ति कला की खूबसूरती से अंकित है।¹³

ए बी एडमिन 2016.12.13 बस्तर का ऐतिहासिक शहर बारसूर बारसूर में भी इस पत्थर के खामबों के इस्तेमाल के कारण यह बत्तीसा मंदिर सिरगुड़ी के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें दो गर्भ गृह हैं और विशाल मंडप पत्थर के खाण्डों से बना है। गर्भ गृह के सामने एक सुंदर नाक्काशीदार नंदी बाहर विराजमान है।

छिंदक नागवंश के पश्चात काकतीय वंश का शासन आया। लाल जगदलपुर का कहना है कि यह मंदिर प्रताप रुद्रदेव के छोटे भाई अन्नमदेव ने बनवाया था। इस मंदिर में देवनागरी लिपि में लिखे शिलालेख मिले हैं। मंदिर द्रविड़ शैली में निर्मित है मंदिर में कौरव मंडप महामंडप मुख्य मंडप अंतरालय और गर्भ गृह से मिलकर बना है। मंदिर के प्रत्येक खंड में गहरे काले पत्थरों से मूर्ति शिल्प शोभनीय है।¹⁴

डॉ. तृषा शर्मा इतिहास का प्राचीन देव प्रतिमा। इस प्रकार हम पाते हैं कि उत्तर भारत की चैत्य शिल्प से स्थापत्य कला की शुरुआत होती है। यह कला जो कि छत्तीसगढ़ के मंदिरों की खास विशेषता है। बस्तर अंचल में फलती फूलती रही। शीघ्र ही दक्षिण भारत की चालुक्य शैली ने स्थान ग्रहण किया। कालांतर में द्रविड़ शैली की विशेषताएं अपनाई गईं। कुल मिलाकर उत्तर और दक्षिण को जोड़ने वाला बस्तर स्थापत्य कला के दृष्टिकोण से संधि स्थल पर अवस्थित है।

सन्दर्भ सूची :

1. पटेरिया शिव अनुराग छत्तीसगढ़ वार्षिकी 2019 पृष्ठ क्रमांक- 3
2. पटेरिया शिव अनुराग छत्तीसगढ़ वार्षिकी 2019 पृष्ठ-3
3. डी ब्रेड ई ए द सेंट्रल प्रोविजंस गजेटिया छत्तीसगढ़ फ्यूडररी स्टेट 1908 पृष्ठ 25।
4. ग्रीक्सन डब्लू द मारिया गोंडस आफ बस्तर ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस 1938 पृष्ठ -3।
5. सोरी पुरोहित कुमार रियासत कालीन बस्तर में सन 1876 का आदिवासी आंदोलन 2023 पृष्ठ क्रमांक 15
6. जगदलपुरी लाल बस्तर इतिहास एवं संस्कृति मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल 1994 पृष्ठ 1
7. सागर मुनीकांत खजुराहो का वैभव 1969 पृष्ठ 37।
8. पांडे लोचन प्रसाद संवत् 2000 पृष्ठ 77।
9. हीरालाल राय बहादुर मध्य प्रदेश का इतिहास पृष्ठ 3
10. शर्मा डॉक्टर तृषा छत्तीसगढ़ की प्राचीन देवी प्रतिमाएं पृष्ठ संख्या 133।
11. एवी एडमिन 2016 -12- 23 बस्तर का ऐतिहासिक शहर बारसूर
12. शर्मा डॉक्टर तृषा छत्तीसगढ़ की प्राचीन देवी प्रतिमाएं पृष्ठ 133।
13. एवी एडमिन 2016 12-23 बस्तर का ऐतिहासिक शहर बारसूर।
14. शर्मा डॉक्टर तृषा छत्तीसगढ़ की प्राचीन देवी प्रतिमाएं।